ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-5* Issue-5* June- 2020
Innovation The Research Concept

भोजपुरी ऋतुगीतों में व्यक्त जीवन के विविध रूप

Varied forms of Life Expressed in Bhojpuri Seasons

Paper Submission: 15/06/2020, Date of Acceptance: 26/06/2020, Date of Publication: 27/06/2020

स्वर्णलता कदम
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
श0म0प0 राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

भोजपुरी एक इण्डो–आर्यन भाषा है जो उत्तर–पूर्वी भारत और नेपाल के तराई क्षेत्रों में प्रचलित है। यह भाषा मुख्य रूप से पश्चिमी बिहार तथा पूर्वी उत्तर प्रदेश में बोली जाती है। झारखण्ड में छोटानागपुर के पठारी इलाके पलामू तथा रॉची में भी यह भाषा प्रचलन में है। बिहार में छपरा (सारण), सिवान, गोपालगंज, आरा, बक्सर, भभूआ, रोहतास (सासाराम), पूर्वी चम्पारण (मोतीहारी), तथा पश्चिमी चम्पारण (बेतिया) एवं उत्तर प्रदेश के बनारस, मिर्जापुर, सन्त रविदास नगर, भदोही, जौनपुर, आजमगढ़, फैजाबाद, गाजीपुर, बलिया, गोरखपुर, देवरिया, कुशीनगर, बस्ती, सिद्धार्थ नगर तथा सन्त कबीर नगर जिलों में प्रमुखता से यह भाषा बोली जाती है। किन्तु व्यापक रूप में यह भाषा पुरे विश्व में– जहॉ–जहॉ भोजपुरी समाज के लोग हैं, बोली जाती है। नेपाल, मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, गुयाना, टोबैगो, ट्रिनीडाड, लैटिन अमेरिका तथा बांगलादेश में राष्ट्रीय स्तर पर इसकी प्रतिष्ठा सर्वविदित है। भोजपुरी समाज से हमारा अभिप्राय पश्चिमी बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के उस सीमित क्षेत्र से है जिसकी मातृभाषा भोजपुरी है।

डॉ0 गियर्सन ने भोजपुरी समाज की विशेषताओं का उल्लेख इन शब्दों में किया है –

''भोजपुरी उस उत्साही जाति की व्यवहारिक भाषा है जो परिस्थिति के अनुरूप अपने को बदलने के लिये हमेशा तैयार रहती है और जिसका प्रभाव हिन्दुस्तान के हर भाग पर पड़ा है। हिन्दुस्तान में सभ्यता फैलाने का यश बंगालियों और भोजपुरियों को प्राप्त हे।''

यह अतिश्योक्ति नहीं है, संसार का इतिहास गवाह है कि जहॉ–जहॉ भोजपुरी समाज के लोग पहुँचे, वहाँ – वहाँ विकास की धारा प्रवाहित हुई। प्रकृति पर निर्भर इस समाज के परिश्रमी लोगों के भीतर कठोर पर्वतों की छाती चीर कर उनके भीतर से शीतल जल स्त्रोत निकालने का हौसला रहा। प्रकृति के कोप का शिकार होकर इन्हें समय–समय पर दूर–दूर तक पलायन करना पड़ा। एग्रीमेंट के तहत दुसरे देशों में जाने वाले इन श्रमजीवियों के लिए 'गिरमिटिया' शब्द प्रसिद्ध ही हो गया है। ये अपनी जमीं पर रहें या दुसरे जगहों पर, सभी जगह इनकी खास पहचान बनी रही।

भोजपुरी क्षेत्र लोकगीतों की धरती है। यहाँ का कण–कण लोकगीतों से ओत–प्रोत है। इन गीतों में भोजपुरी ग्राम्य जीवन की आत्मा समाहित है। इन गीतों का इतिहास मानव–जीवन का इतिहास है। गंगा, सरयू, गोमती, सोन, तमसा आदि नदियों से घिरा हुआ यह क्षेत्र इसके मैदानी भाग, लहराते खेतों, दक्षिणी भाग विन्ध्य की पहाड़ियों और जंगलों से घिरा है। प्राकृतिक सम्पदा से यह क्षेत्र सम्पन्न है और वर्षा, शरद, तथा ग्रीष्म ऋतुएँ इस क्षेत्र के जनजीवन को प्रभावित करती हैं। यहाँ के किसानों के कंठ से हल चलाते समय, बीज बोते समय, खेत निराते समय, फसल काटते समय न जाने कितनी स्वर–लहरियाँ फूट पड़ती हैं। विभिन्न ऋतुओं में यहाँ के नर–नारी, बाल–वृद्ध मौसमी लोकगीतों के धुन में विभोर हो उठते हैं।

Bhojpuri is an Indo-Aryan language which is prevalent in the Terai regions of North-East India and Nepal. This language is mainly spoken in western Bihar and eastern Uttar Pradesh. This language is also in circulation in Palamu and Ranchi in the plateau area of Chotanagpur in Jharkhand. Chhapra (Saran), Siwan, Gopalganj, Ara, Buxar, Bhabua, Rohtas (Sasaram), East Champaran (Motihari), and West Champaran (Bettiah) in Bihar and Banaras in Uttar Pradesh, Mirzapur, Sant Ravidas Nagar, Bhadohi, Jaunpur, This language is spoken prominently in Azamgarh, Faizabad, Ghazipur, Ballia, Gorakhpur, Deoria, Kushinagar, Basti, Siddharth Nagar and Sant Kabir Nagar districts. But this language is widely spoken all over the world - where there are people of Bhojpuri society. Its reputation is well known nationally in Nepal, Mauritius, Fiji, Suriname, Guyana, Tobago, Trinidad, Latin America and Bangladesh. By Bhojpuri society we mean a limited area of western Bihar and eastern Uttar Pradesh, whose mother tongue is Bhojpuri. Bhojpuri region is the land of folk songs. The particles here are full of folk songs. These songs contain the soul of Bhojpuri rural life. The history of these songs is the history of human life. Surrounded by rivers like Ganga, Saryu, Gomti, Sone, Tamsa etc., this area is surrounded by its plains, waving fields, the southern part of the Vindhya hills and forests. This region is endowed with natural wealth and the rain, autumn, and summer seasons affect the life of the region. No matter how many waves come out of the farmers here, while running the plow, sowing seeds, dismantling the fields, while harvesting. In different seasons, the male-female, child-aged here become different to the tune of seasonal folk songs.

मुख्य शब्द : भोजपुरी, गिरमिटिया, ग्राम्य, लोकगीतों आदि।
Bhojpuri, Girmitiya, Rustic, Folklore etc.

प्रस्तावना

भारत को गाँवों का देश कहा जाता है। गाँव की अगर बात आती है, तो लोकभाषा और लोकसाहित्य की बात किये बगैर हम आगे नहीं बढ़ सकते हैं, क्योंकि हम अपने लोकभाषा और लोकसाहित्य को छोड़कर नहीं रह सकते हैं। यही कारण था कि आज भी गाँव या भोजपुरी क्षेत्र के लोग जहाँ भी गये अपने साथ वो लोकभाषा और लोकसाहित्य लेकर गये। यही कारण है कि वर्तमान समय में लोकभाषा और लोकसाहित्य भारत के कोन–कोने में तो फैला ही है विदेशों में भी में हर स्थान पर हमारा लोकसाहित्य व लोक संगीत रच बस गया है। पूरब से लेकर पश्चिम तक और उत्तर से लेकर दक्षिण तक, इतनाा ही नहीं अरब सागर , प्रशान्त महासागर, हिन्द महासागर के द्वीप हो या महाद्वीप हो सभी को इस भाषा साहित्य ने अछूता नहीं छोड़ा है। इस लोकभाषा और लोकसाहित्य की अपनी एक विशेषता है जिसकी न तो हम तुलना ही कर सकते हैं और न ही अभिव्यक्ति ही। अतः किसी भी देश की संस्कृति का वास्तविक स्वरूप उसके लोक साहित्य में ही परिलक्षित होता है। संस्कृति का अर्थ वस्तुतः 'लोक संस्कृति' ही है।

''मानव की प्रायः प्रत्येक संस्कृति में व्यक्ति की जीवन यात्रा के विभिन्न संक्रमण कालों का विशेष महत्व होता है। जन्म, विवाह एवं मरण इस प्रकार तीन मुख्य स्थितियाँ हैं जिनके आस–पास मानव समूह विश्वासों, रीति–रिवाजों और व्यवहारों का ऐसा जटिल ताना–बाना बुन लेता है कि उनके वास्तविक स्वरूप को समझे बिना उस संस्कृति का पूर्ण चित्र प्राप्त ही नहीं किया जा सकता। समाज संगठन का यह पक्ष मानव के उत्तरोत्तर परिवर्तित होने वाले उत्तरदायित्वों एवं कार्यों की दिशा निश्चित करता है।''[1]

भोजपुरी लोकगीतों, लोक कथाओं, लोक गाथाओं, लोक नाटकों एवं सुभाषितों में भोजपुरी स्वभाव एवं संस्कृति की विविध रूपों में अभिव्यक्ति हुयी है। भोजपुरी के संस्कार गीत श्रोता का मन मोह लेते हैं। डॉ0 विजय कुमार के अनुसार–

''जन्म से लेकर मृत्यु तक विविध अवसरों से जुड़े भोजपुरी के संस्कार गीत, ऋतु गीत, श्रम गीत, व्रत एवं त्यौहार गीत जनजातियों के दर्द की अभिव्यक्ति करने वाले गीत, देश–प्रेम एवं राष्ट्रीयता से भरपूर गीत भोजपुरी समाज की चारित्रिकता की समुचित अभव्यक्ति करने में समर्थ है। विवाह के समय के गीत और इससे सम्बंधित उपसंस्कार गीत, स्थानीय देवी–देवताओं को समर्पित गीत बड़े ही मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी हैं। भोजपुरी के माता गीत परम कारूणिक हैं। विभिन्न अवसरों पर आयोजित गीतनृत्यों में तथा गायकों और यहाँ के नर्तकों की वेश–भूषा में भोजपुरी लोक संस्कृति की जीवंतता की अभिव्यक्ति होती है। भोजपुरी क्षेत्र में प्रचलित मूर्त्तिकला, स्थापत्य कला, चित्रकला और यहाँ के मिट्टी के बर्त्तन, बाँ आदि से निर्मित घरेलू उपयोग की वस्तुएँ यहाँ की लोक संस्कृति को अभिव्यक्त करती हैं। गृह निर्माण से लेकर खाने–वाने की विभिन्न प्रकार के बर्त्तन, पहनावे खाद्य–सामग्रीयाँ इस भाषा–भाषी क्षेत्र के लोगों के विशिष्ट स्वभाव का परिचय देती है।'' [2]

भोजपुरी जनता में अपने देश की शस्य श्यामल धरती, यहाँ की रमणीय प्रकृति, यहाँ के इतिहास, भूगोल, पहाड़, झरने, नदी–नद और अमर साहित्यकारों तथा साहित्य संपदा से कितना अनुराग है। जिस प्रकार व्यक्ति समाज से विमुख नहीं हो सकता, उसी प्रकार वह प्रकृति से भी विमुख नहीं हो सकता। वह प्रकति की गोद में जन्म लेता है, साँस लेता है, हर क्षण व्यतीत करता है और उसी में बड़ा होकर मृत्यु वरण करता है। इस प्रकार जन्म से मरण तक व्यक्ति का प्रकृति के साथ अटूट सम्बन्ध बना रहता है। वह प्रकृति के विभिन्न परिवर्तित रूपों को संवेदनात्मक रूप से महसूसता है और विविध भावनाओं के साथ सामंजस्य स्थापित कर तदनुरूप हर्ष–विषाद का प्रकटीकरण करता है। यह सर्वविदित तथ्य है कि मानव–मन पर प्रकृति का गहरा प्रभाव पड़ता है। प्रकृति में एकरसता नहीं है। प्रत्येक दिन, माह, वर्ष से भी यह तथ्य स्पष्ट होता है। दिन–रात, सुबह–शाम आदि प्रकृति–परिवर्तन का प्रभाव मानव के मनः–मस्तिष्क पर पड़ता है। यही कारण है कि पण्डितों ने पूरे वर्ष को परिवर्तन के आधार पर मोटे तौर पर इसे तीन कालों में विभक्त किया है– वसंत, वर्षा और शीत। पुनः इन तीनों को दो–दो माह में विभक्त कर छः ऋतुओं को निर्धारित किया है। इसे निम्नवत् आरेख द्वारा सुगमता से समझा जा सकता है–

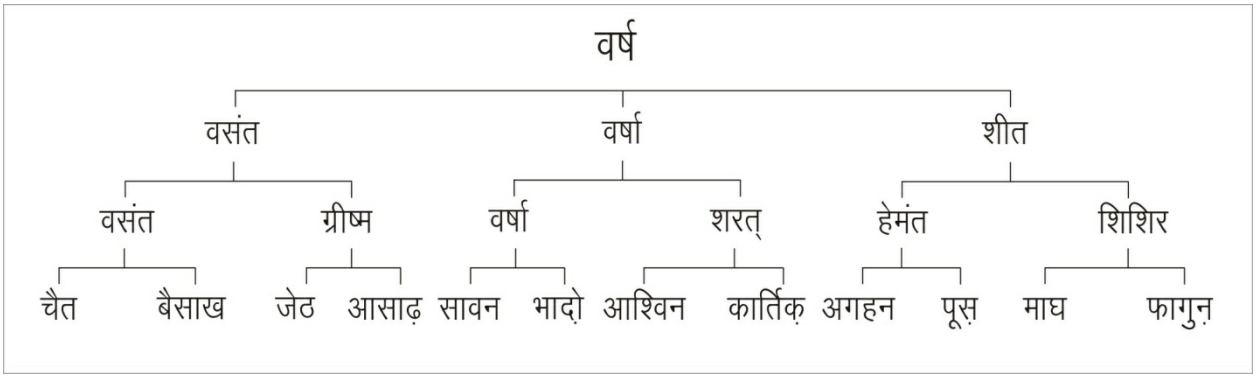

उक्त प्रकृति के परिवर्तित रूपों से मानव –मन जुड़कर अपनी एकरसता मिटाता है और विविध रूपों से आनन्द लाभ करता है। ऋतु आगमन से उसका मन मस्तिक तदनुरूप हो जाता है और उसका पुरा आनन्द उठाता है। यथा वसंत ऋतु के आगमन पर भोजपुरी के लोगों के ओष्ठ फरकने तथा अंग–प्रत्यंग हिलने–डुलने लगता है और मन विभोर हो जाता है।

वसंत ऋतु

भोजपुरी में यह कहावत प्रचलित है कि एक माह पहले ऋतु धावे। यह कहावत वसंत ऋतु के प्रभाव को महसूस कर ही प्रचलित हुयी होगी। यही कारण है कि माघ शुक्ल पक्ष पंचमी के दिन ही लोग गोल बाँध कर ढोल–झाल आदि वाद्य–यंत्र लेकर ठेका ठोक देते हैं। वसंत ऋतु का प्रमुख गीत होली गीत है तथा इस गीतोत्सव में अबीर–गुलाल का भी उपयोग करते हैं। इस प्रकार चैत में प्रारम्भ होने वाला यह ऋतु न केवल एक माह, बल्कि डेढ़ माह पूर्व अपना प्रभाव उजागर करता है। इस ऋतु में जो गीत गाये जाते हैं, वे दो प्रकार के हैं–

1. होली या फाग और
2. चैता

किन्तु चैता की अपेक्षा होली गीत का अधिक महत्व है। इसके बिना वसंत ऋतु की आनन्ददायक उन्मादकता सार्थक नहीं है, क्योंकि यह वसंत ऋतु की आनन्ददायक उन्मादकता के लिए ही प्रसिद्ध है।

फागुन माह की पूर्णिमा के दिन होलिका दान होता है, जिसकी खुशी में चैत के प्रथम दिन यानी प्रतिपदा को आनन्दोत्सव मनाया जाता है। इसमें वृद्ध–वृद्धा, युवा–युवतियाँ बच्चे–बच्चियाँ सभी समान रूप से भाग लेते हैं और विविध प्रकार से एक दूसरे के प्रति आन्नद–बोध करते कराते हैं, रंग गुलाल देते हैं, गले मिलते हैं, और होली के गीत, जिनके विविध वर्ण्य विषय हैं, गाते हैं। यथा– राधा–कृष्ण, सीता–राम तथा सामान्य जन समूह पर आधारित रचित रचनाओं को उमंग के साथ झूम–झूम कर गाते हैं। इस समय वे एक–दूसरे के ऊपर रंग गुलाल डालते हैं, नाचते–गाते हैं और विविध प्रकार के स्वाँग करते हैं। सामान्य जन–समूह से सम्बद्ध गीतों में सामाजिक रूप से अस्वीकृत शब्दावलियों का भी खुलकर प्रयोग किया जाता है और गीत के अन्त में वे एक स्वर में कहते हैं– बुरा न मानों होली है। खासकर जोगीड़ा में इस तरह के फूहड़ शब्दों का आधिक्य रहता है। जोगीड़ा एक तरह से फगुआ का ही लघु संस्करण है।

प्रकृति में चारों तरफ विभिन्न प्रकार के फूल खिले हुए हैं। बाग–बगीचे के वृक्ष हरे– भरे हैं। हर तरफ प्रकृति में आमोद–प्रमोद, हर्ष–उल्लास का वातावरण छाया हुआ है। ऐसी उन्माद उत्साहकारी वातावरण में मानव–मन चुप–चाप कैसे रह सकता है !

''बूकू बहल करि ककाल चिया करि,
तोमार मन सुवनी नाइ।
समनीयाए सुधिले कमे किए बूलि,
सरितो मरितो आई।''

वसंत ऋतु में होली के बाद चैता गाया जाता है, जिसमें विविध वस्तुओं को वर्ण्य विषय बनाया जाता है अवश्य, परन्तु अधिकतर प्रेमाधारित विषयों को ही चित्रित–वर्णित किया जाता है। यह स्वीकार किया गया है कि वसंत का माह आनन्दोपलब्धि का माह होता है। इस माह में मन में उमंग व उत्साह का संचार बराबर होता रहता है। इस ऋतु का प्रभाव चेतन–अचेतन दोनों पर समान रूप से पड़ता है। वसंत अपनी अमोध मादकता के लिए प्रसिद्ध है। इस समय बाग–बगीचा, फल–पुष्प गुच्छों से परिपूर्ण होकर चारों तरफ सुगन्ध बिखेरने में तत्पर रहते हैं, जिसमें हर प्राणी मनमोहक वातावरण में झूम उठता है। शरीर में आलस्य तंद्रा भाव व्याप्त हो जाता है। मादकता के कारण तंद्रिल शरीर भाव–विभोर रहता है। इस समय पशु–पक्षी, पेड़–पौधे, गुल्म–लता मदभरी गंध से पूर्ण मलयानिल मानव हृदय को बोझिल बनाने में सफल होते हैं। प्रकृति का हर रस स्निग्ध परिवेश में चारों तरफ अपना अमिट प्रभाव छोड़ने में समर्थ होता है। इस तरह चैत मास में गाये जाने वाले गीतों को चैता कहा जाता है। इसका एक सफल उदाहरण निम्नवत् है–

''ए राम छोटी मुकी कान्हा
अरे दौरे रे अगनवाँ
ए रामा रूनझुन।
अरे बाज पग
प्यजनिया ए रामा, रूनझुन।।''

वसंत ऋतु के बाद वर्षा ऋतु आती है, जिसका प्रभाव विरही जनों पर अत्यधिक पड़ता है। इसका जीता–जागता उदाहरण है कालिदास कृत 'मेघदूत'। यक्ष कार्त्तिक मास में शापित होता है। वह रामगिरि पर चला जाता है। वह शीत काल और वसंत काल को बिना विरह–बोध किये व्यतित कर देता है, पर ज्यों ही वह आषाढ़ के पहले दिन ही मेघ का टुकड़ा देखता है, त्यों ही उसे प्रियतमा की याद आ जाती है और तज्जन्य विरह–बोध करने लगता है और मेघ से अपनी प्रिया के पास सन्देश भेजने के लिए उसका अनुनय–विनय करने लगता है। यह मेघ निर्जीव पदार्थ है, उससे सन्देश भेजना एक अत्यन्त निकृष्ट काम है। वर्षा ऋतु की मादकता, कामोद्दीपता का वर्णन न केवल कालिदास, तुलसीदास आदि कवियों ने किया है, वल्कि भिखारी ठाकुर ने भी उसका बखुबी वर्णन किया है। यथा–

''सखिया सावन बहुत सुहावन बा,
मनभावन अइलन मोर।
एक त पावस खास अमावस,
काली घटा चहुं ओर।। सखिया।।
पानी बरसत जियरा तरसत,
दादुर मचावत सोर।। सखिया।।
ठनका ठनकल झिंगुर झनकल
चमकत बिजली ताबरतोर।। सखिया।
कहत भिखारी बिहारी पिआरी से होई
गइलन चितचोर।। सखिया।।

सावन माह में बाग–बगीचे, पोखर के किनारे झूला लगाने की प्रथा भोजपुर के पश्चिमी भाग में है, जिसपर बैठकर गाँव के युवक–युवती झूला–झूलते हैं और कुछ न कुछ गुनगुनाते रहते हैं। सावन की शीतल बयार और कभी–कभी हल्की फुहार मन में मस्ती ला देती है। उनका सुहावना रूप बड़ा ही मनमोहक होता है। इसी अवसर पर कजरी नामक गीत गाया जाता है। नीचे जो

उदाहरण दिये जा रहे हैं वह पति–पत्नी के स्वाभाविक प्रेम पर आधारित है–

''बेल फूलू आधी रात,
चमेली भिनसहरा हे हरी,
सोने की प्याली में जेवना परोसलों रामा
अरे रामा सइयाँ जेवें आधी रात,
देवरा भिनसहरा हे हरी।''

कजरी में कभी–कभी सामान्य जन–जीवन के भावों को भी वर्णित किया जाता है।

पुत्री पिता से –

''कोठवा पर बोले कोठी बाली हो चिरइयां।
कि बनवा में बोलेला हो बनवा के मोरवा।।
मोरवा के बोली सुनी बिहरेला करेजवा।
स कद बाबा हमरो हो गवनवा।।

पिता पुत्री से–

असों के सवनवा बेटी खेली ल कजरिया।
से आगे अगहन हम करब हो गवनवा।।

पुत्री का कथन –

अगिया लगइबो बाबा आगे अगहनवा।
समइया हमरो बीतल हो नइहरवा।।''

उक्त गीत में पिता–पुत्री के गीतात्मक वार्त्तलाप के माध्यम से पुत्री की विरह वेदना को व्यक्त की गयी है। यहाँ पुत्री सब सामाजिक शिष्टाचार को नकारते हुए पिता से विदाई की बात करती है।

झूला के गीत

यह कजरी का ही सहधर्मी है। यह स्वीकार किया गया है कि सावन माह में बालक–बालिका, नर–नारी, बाग–बगीचा, पोखर–तालाब के किनारे झूला या हिंडोला लगाते हैं और शाम में उसका अपूर्व आनन्द लेते हैं। इसी क्रम में झूलने वाला और झूलानेवाला मिलकर जो गीत गाते हैं, उसे ही झूला के गीत नाम से जाना जाता है। इन गीतों को डोला गीत भी कहा जाता है। यह सावन माह में ही कजरी के समय प्रचलित है, इसलिए इसे ऋतुपरक गीतों के अन्तर्गत रखा जता है।

''मोरे सइयाँ हो, ल`चल नदिया के पार''

उक्त गीत ने भोजपुरी क्षेत्र में धूम मचा दी थी। इसके प्रभाव से अनेक गीतों की रचना हुयी। ऐसी स्थिति की पति–पत्नी से सम्बद्ध गीत अधिक प्राप्त होते हैं। इसका एक उदाहरण निम्नवत् द्रष्टव्य है–

''धीरे बहु नदिया धीरे बहु,
मोरे सैंयाजी उतरेंगे पार।
अरे काहे क तोरी नइया हे,
काहे के हवे पतवार।।
कहाँ तोर नइया खेवइया हे,
कौर धन उतरई पार हे।
धरम के हऽ हमर नइया हे,
सत के लागल हऽ पतवार हे।।
सैंया मोर नइया खेवइया हे,
हम धन उतरब पार।''

उक्त गीत में पत्नी नदी की स्तुति करती हुई नदी से धीरे–धीरे बहने को निहोरा करती है। यहाँ प्रश्नोत्तर के भाव को जिस प्रकार से वर्णित किया गया है, वह मनोरम है, हृदय स्पर्शी है।

अध्ययन का उद्देश्य

ग्रामीण जीवन संस्कारों से ओतप्रोत है खान–पान, वेशभूषा, रीतिरिवाज, व्रत त्यौहार परम्परा मान्यताएँ आदि लोकगीतों के बल पर जिन्दा है। भोजपुरी लोकगीतों में पूरे समाज का दस्तावेज होता है। परन्तु ग्रामीण नगर जीवन के सहज संवेदनापरक बिंबों में टूटन आने लगी है या बलात् उन्हें तोड़ने का प्रबंध किया जा रहा है। अतः इस भाषा भाषी क्षेत्रों के प्रबुद्ध लोगों का यह नैतिक दायित्व है कि वे ज्ञान विज्ञान के विविध क्षेत्रों की उपलब्धियों को भोजपुरी साहित्य में उपलब्ध कराते हुए श्रेष्ठ और सुसंस्कृत साहित्य को रचकर इसे समृद्धि के मार्ग पर ले जाये।

बारहमासा

ऐसे गीत रचने की परम्परा रही है जिसमें साल के बारह माहों की विशेषता विद्यमान रहती है। अनुमानतः इस गीत की परम्परा अति प्राचीन है। मलिक मुहम्मद जायसी ने नागमती का विरह वर्णन करते समय बारहमासा की रचना की थी, लेकिन यह परम्परा उनसे भी पूर्व रही होगी। इसका मूल भाव वियोग–वर्णन है। पति वियोग में विरहनियों की वेदना–पीड़ा वर्ष के प्रत्येक माह में कैसी होती है और उसपर प्रकृति का क्या प्रभाव पड़ता है, इसी भाव को आधार बनाकर उक्त विषयागीत की रचना की जाती है। यहाँ इसका एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

''आवेला आषाढ़ माह लागेला अधिक आस,
बरखा में पिया घर रहितन बटोहिया।
पिया अइतन बुनियाँ में, राखी लिहतन दुनियाँ में,
अखड़ेला अधिका सवनवा बटोहिया।
आई जब मास भादो, सभे खेले दही कादो,
कृष्ण के जनम बीती असही बटोहिया।
आसिन महिनवाँ के, कड़ा घाम दिनवाँ के,
लुकवा समानवाँ बुझाला हो बटोहिया।
कातिक के मासवा में, पिअऊ का फाँसवा में,
हाड़ में से रसवा चुअत बा बटोहिया।
अगहन–पूस मासे, दुख कहीं केकरा से ?
बनवाँ सरिस बा भवनवाँ बटोहिया।
मास आई बाघवा, कँपावे लागी माघवा,
त हाड़ता में जाड़वा समाई हो बटोहिया।
पलंग बा सूनवा, का कइली अवगुनवाँ से,
भारी ह महिनवाँ फगुनवाँ बटोहिया।
अबीर के घोरि–घोरि, सब लोग खेली होरी,
रंगवा में भँगवा परल हो बटोहिया।
कोइली के मीठी बोली, लागेला करेजा गोली,
पिया बिनु भावे ना चइतवा बटोहिया।
चढ़ी बइसाख जब, लगन पहुँची तब,
जेठवा दबाई हमें हेठवा बटोहिया।''

इससे अलग भोजपुरी का बहुत विशाल साहित्य ग्राम्य गीतों, संस्कार गीतों, ऋतु गीतों, पर्वों, त्यौहारों और व्रतों से सम्बन्धित है जो अधिकांशतः वाचिक परम्परा में प्रचलित रहा। इसके संग्रह की दशा में पं0 राम नरेश त्रिपाठी, डॉ0 कृष्णदेव उपाध्याय, श्री दुर्गाशंकर प्रसाद सिंह, डॉ0 रामनिवास मिश्र और डॉ0 जितेन्द्र नाथ मिश्र आदि ने उल्लेखनिय कार्य किया है। इस दिशा में गंभीर

एवं व्यवस्थित प्रयास किये जाने की अभी बड़ी आवश्यकता है।

लेखक का मानना है कि भोजपुरी साहित्य पर लिखने का अर्थ है अपने समय की ऊर्जा को महत्व देना, तरूणाई को मान देना और साकारात्मक परिवर्तन की ओर कदम बढ़ाना। भेजपुरी हमारे मन का हरियाली क्षेत्र है। कहने का तात्पर्य है – फूलों का खिलना, वनस्पतियों का प्रसन्न हो जाना और धरती का श्रृंगार करना।

आज जीवन आनन्दहीन, प्रेमहीन सा प्रतीत होता है, इसलिए वह आवेग रहित हो गया है। जैसे जीवन से मादकता बिछुड़ गया हो। ऐसा लगता है जैसे उसके आस–पास स्वयं को और समाज को देने के लिए प्रगाढ़ता बची ही नहीं है। सोचिए, बिना प्रगाढ़ता के मनुष्य का क्या अर्थ जहाँ निकटता नहीं है वहाँ नीरसता ही छायेगी! विकल्प के रूप में सोशल साइट्स का प्रचलन बढ़ेगा और ई संपर्क साधे जायेंगे। भोजपुरी गीतों के उल्लास और विद्रोह को पहले जीवन में समेटने का प्रयास करें, फिर वर्चुआलिटी की ओर कदम बढ़ायें, वरना आप निःश्चय ही इन्द्रधनुष न ही देख सकेंगे और न ही उसके सप्तरंगी आभूषणों का लूत्फ उठा सकेंगे। उस चाँद की शीतलता नहीं महसूस कर पायेंगे जो दूधिया शक्ल में आपके आस–पास बिखर कर नित्य एक नव प्रफूल्लित दृश्य प्रस्तुत करता है। रोजमर्रा की जीन्दगी में घुसपैठ कर चुकी जड़ता को तोड़ने के लिए ही प्रकृति ने साहित्य रूपी उत्सव को रचा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. *डॉ0 श्यामचरण दूबे, मानव और संस्कृति, पृष्ठ सं0–256*
2. *भोजपुरी भाषा, साहित्य और संस्कृति, विजय प्रकाशन, वाराणसी, 2004–05*
3. *भोज–श्रृंगार प्रकाश, 2–318*
4. *भिखारी ठाकुर रत्नावली, सं0 नगेन्द्र सिंह, पृष्ठ सं0–29*
5. *वही, पृष्ठ सं0–183*
6. *अनिरूद्ध त्रिपाठी 'अशेष' प्रेमायन सर्ग– 4 पद–32*
7. *डॉ0 भागीरथ मिश्र, काव्यरस, पृष्ठ सं0–126*
8. *अनिरूद्ध त्रिपाठी 'अशेष' प्रेमायन सर्ग– 8 पद–129–30*
9. *भिखारी ठाकुर रत्नावली, सं0 नगेन्द्र सिंह, पृष्ठ सं0–121*